International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 3, May 2021 |

तिजारा चंद्रप्रभु का जैन मंदिर

Pawan Kumar

Assistant Professor, History, Babu Shobha Ram College, Alwar, Rajasthan, India

सार

तिजारा जैन मंदिर राजस्थान के अलवर जिले में स्थित एक प्रमुख जैन मंदिर है। मंदिर अलवर से ५५ और दिल्ली से ११० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह एक "अतिशय क्षेत्र" है।[1] यह मंदिर वर्तमान अवसर्पिणी काल के आठवें तीर्थंकर, चन्द्रप्रभ स्वामी को समर्पित है।१६ अगस्त १९५६ को सफ़ेद रंग की चन्द्रप्रभ भगवान की एक प्रतिमा भूगर्भ से प्राप्त हुई थी। यहाँ स्थित एक टीले से यह मूर्ति निकलने के बाद ऐसा विश्वास हो गया था की यह एक "देहरा" रहा होगा जहाँ जैन मूर्तियों की पूजा होती होगी। मूर्ति मिलने के बाद मंदिर का निर्माण कराया गया था जिसके पश्चात यह फिर से एक प्रमुख जैन तीर्थ बन गया है।[2] मंदिर में मुख्य वेदी चन्द्रप्रभ भगवान की है। प्रतिमा की ऊंचाई १५ इंच है। प्रतिमा पर अंकित उत्कीर्ण लेख से पता चलता है कि प्रतिमा प्रथम बार विशाख शुक्ल १५५४ के तीसरे दिन स्थापित की गयी थी।

परिचय

तिजारा जैन मंदिर एक दिगंबर जैन मंदिर है जो [[चंद्रप्रभु]] को समर्पित है। यह मंदिर भारत के राजस्थान के अलवर जिले के पहाड़ी शहर तिजारा में स्थित है । यह एक अतिशय क्षेत्र है (अंग्रेज़ी: वह स्थान जहाँ चमत्कार होते हैं)। यह अलवर से 55 किलोमीटर (34 मील) और दिल्ली से 110 किलोमीटर (68 मील) दूर है । यह स्थान जैनियों का तीर्थ और पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है । [1] 16 अगस्त 1956 को चंद्रप्रभ की एक मूर्ति की बरामदगी के बाद 1956 में मंदिर की स्थापना की गई थी। [2] 1972 में, कमल की स्थिति में एक और 8 इंच (20 सेमी) चंद्रप्रभु की मूर्ति की खोज की गई थी। सफेद पत्थर की मूर्ति को भूमिगत से प्राप्त किया गया था, जिससे इस विश्वास को बल मिला कि यह स्थान कभी देहरा था , जहां जैन मूर्तियों की पूजा की जाती है। जैन मंदिर की स्थापना के बाद , इस स्थान ने तीर्थस्थल के रूप में अपना पूर्व महत्व पुनः प्राप्त कर लिया है। [1] [3]

1. तिजारा जैन मंदिर का इतिहास

तिजारा जैन मंदिर का इतिहास 1956 का है, जब एक खुदाई के दौरान मंदिर के मुख्य देवता चन्द्र प्रभु की पद्मासन मुद्रा में सफेद संगमरमर से बनी 15 इंच लंबी मूर्ति की खोज की गई थी। कुछ पुराने शास्त्रों के अनुसार, यह विक्रम संवत 1554 के वैशाख शुक्ल के 3 वा दिन था। और उसके बाद वर्ष 1972 में, चंद्र प्रभु की एक और कमल की स्थिति में 8 इंच लंबी मूर्ति की खोज की गई थी। इन निष्कर्षों ने इस विश्वास को मजबूत किया कि यह स्थान कभी देहरा या जैनियों का पूजा स्थान था।

2. तिजारा के जैन मंदिर की वास्तुकला

जैन मंदिर जटिल मूर्तियों, विस्तृत नक्काशी और प्राचीन चित्रों के साथ एक उत्कृष्ट कला से निर्मित है जो इसे राजस्थान के सबसे लोकप्रिय पर्यटक स्थलों में से एक बनाता है। जैन मंदिर में तीन ऊंची सतह हैं जहा पर भगवान् श्री चंद्र प्रभु की 15 इंच ऊँची सफेद रंग की संगमरमर के पत्थर से बनी मूर्ति स्थापित की गई है। तिजारा के जैन मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ और भगवान महावीर की दो अन्य मूर्तियाँ भी स्थापित हैं। तिजारा में जैन मंदिर आकार में आयताकार है जो अद्भुत स्तंभों और मेहराबों से सुसज्जित है। मंदिर के अंदरूनी हिस्से को चित्रों, कांच के काम और नक्काशी के साथ सौंदर्य से सजाया गया है। विस्तृत रूप से सजाए गए मंदिर में एक हॉल भी है जिसमे एक साथ 200 लोग बैठ सकते हैं।[**4**,**6**]

3. अलवर के तिजारा जैन मंदिर की लोकप्रिय मान्यतायें

यहाँ के स्थानीय लोगों की मान्यतओं के अनुसार तिजारा जैन मंदिर में सच्चे और अच्छे इरादों के साथ की गई सभी प्रार्थनाओं को स्वीकृत किया जाता है।

4. तिजारा जैन मंदिर के खुलने और बंद होने का समय

5. तिजारा का जैन मंदिर का प्रवेश शुल्क

तिजारा जैन मंदिर में तीर्थ यात्रियों के प्रवेश के लिए किसी प्रकार चार्ज नही लिया जाता है, पर्यटक यहाँ बिना किसी शुल्क का भुगतान किये तिजारा जैन मंदिर में घूम सकते हैं।

6. तिजारा जैन मंदिर घूमने जाने का सबसे अच्छा समय

वैसे तो तिजारा जैन मंदिर घूमने साल में कभी भी जाया जा सकता है। लेकिन फिर भी नवंबर – मार्च से मार्च तिजारा जैन मंदिर व यहाँ के अन्य भागों की यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय होता है क्योंकि गर्मियां यहाँ बेहद गर्म होती हैं। इसीलिए सर्दियों का समय यहाँ घूमने के लिए सबसे अनुकूल समय होता है।[1,2,3]

विचार-विमर्श

मंदिर के मूलनायक में आठवें तीर्थंकर चंद्रप्रभु की कमल मुद्रा में 15 इंच (38 सेमी) सफेद संगमरमर की मूर्ति है ।

शिलालेख के अनुसार, मूर्ति की स्थापना 1497 (वीएस 1554) में वैशाख शुक्ल के तीसरे दिन की गई थी। दोनों मूर्तियाँ, अन्य मूर्तियों के साथ, शिखरों से सुशोभित एक आयताकार मंदिर में स्थापित हैं। मंदिर की दीवारों पर विस्तृत नक्काशी, पेंटिंग और जटिल कांच का काम है जो जैन किंवदंतियों में तीर्थंकर के जीवन और घटना के विभिन्न दृश्यों को दर्शाता है। [1] मंदिर को एक महत्वपूर्ण जैन केंद्र माना जाता है। [3] [4]

भगवान चंद्रप्रभ के नाम पर " चंद्रलोक सिटी" नामक एक बस्ती है, जो मुख्य सड़क पर 100 एकड़ से अधिक में फैली हुई है। [5]

मुख्य मंदिर के पास 250 वर्ष पुराना पार्श्वनाथ मंदिर स्थित है। नवग्रह जैन मंदिर और पद्मावती मंदिर भी मंदिर परिसर के पास ही हैं। [3] अलवर के तिजारा का चन्द्रप्रभ दिगम्बर देहरा जैन मन्दिर देश भर में प्रसिद्ध है, यहां देशभर से श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं।चमत्कारिक रूप से अर्थात स्वप्न के माध्यम से प्राप्त वर्तमान युग की चौबीसी के अष्टम तीर्थंकर भगवान चन्द्रप्रभु की 15 इंच की अवगाहना को लिए श्वेत मार्बल की अत्यन्त आर्कषक दिगम्बर जिन बिम्ब दिनांक 16 अगस्त 1956 गुरूवार को अभिजीत मुहुर्त में 11 बजकर 55 मिनट पर भूगर्भ से प्राप्त हुई। नगर में स्थित लगभग 215 वर्ष प्राचीन श्री 1008 पार्Ÿवनाथ जिनालय मे इन भगवान की मूर्ति को विराजमान किये जाने की समाज में चर्चाओं के बीच ही क्षेत्र पर विविध अतिशय होने लगे, लोगों की मनोतियां पूण होने लगी, दुख-दर्द मिटने लगे।[2,3]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 3, May 2021 |

परिणाम

तभी देहरे पर ही नवीन जिनालय बनाये जाने का निर्णय लेना पडा। तभी से यह मन्दिर श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र देहरा तिजारा के नाम से जाना जाता है। उतर भारत का प्रसिद्घ चन्द्रप्रभु दिगम्बर देहरा जैन मन्दिर पूरे विश्व मे प्रसिद्घ है। तिजारा का नाम आते ही लोगों को सबसे पहले यहां का देहरा जैन मन्दिर याद आता है। यहां देश भर से हजारों श्रद्घालु मन्दिर मे दर्शन करने के लिए आते है।
मन्दिर के पास निर्मित चन्द्रगिरी वाटिका भी लोगो का मन मोह लेती है। शिक्षा के क्षेत्र मे दो-दो महाविघालय एंव एक उच्च माध्यमिक विघालय शिक्षा के प्रति क्षेत्र की जागरूकता को दर्शाती है। वही जैन औषधालय के पास डिजीटल डिस्पेन्सरी की शुरूआत की गई है। जिसमे टेलीकॉम कॉन्फ्रेंस के जरिये विशेषज्ञ चिकित्सकों के विचार विमर्श किया जाता है। यहां पर 14 प्रकार के खून की जांच भी की जा रही है। जैन मन्दिर की ओर से होम्योपेथिक, दंत चिकित्सक व आयुर्वेदिक चिकित्सा, फिजियो थैरेपी की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। जैन मन्दिर मे जैन दर्शन पर आधारित म्यूजियम भी शीघ्र शुरू होने वाला है।[1,2]

ऐतिहासिक भर्तृहरि गुम्बद एवं शंकरगढ़ आश्रम
तिजारा के दक्षिण में स्थित इस विशाल गुम्बद की गिनती उतरी भारत के बडे गुम्बदों व राजस्थान के सबसे बडे गुम्बद के रूप मे की जाती है। गुम्बद की ऊचांई 240 फुट है। जिसे भर्तृहरि गुम्बद कहा जाता है। यह गुम्बद अपनी वास्तुकला के लिए प्रसिद्घ है। गुम्बद के पास ही सन् 1761 ई. मे मराठों द्वारा निर्मित शंकरगढ आश्रम श्रदालुओं का केन्द्र है। पुरातत्व विभाग के अधीन होने का बावजूद गुम्बद को पर्यटक स्थल के रूप मे विकसित करने के लिये विभाग की ओर से कोई दिलचस्पी नही दिखाई गई।

यदि पर्यटन विभाग गुम्बद को विकसित करता है तो क्षेत्र मे पर्यटन बढेगा। वही गुम्बद के पास शंकरगढ आश्रम मे स्थित भगवान शिव की प्राचीनतम चमत्कारी शिवलिंग स्थित है। जहां रोजाना सैकडों श्रदालु पूजा कर मन्नत मांगते है।
मौनी बाबा गौशाला आश्रम
कस्बे मे सूरजमुखी रोड पर स्थित मौनी बाबा गौशाला आश्रम स्थित है जिसमे करीब एक हजार से ज्यादा गाये है। गौशाला मे गायों के रहने के लिये कमरे एंव टीन शैड बनवाई गई है। गौशाला मे गायों की संख्या अधिक होने से गायों के चारे की उपलब्धता बडी समस्या रहती है। वही क्षेत्र मे बढती गौकशी को लेकर सुरक्षा की दृष्टि से गौशाला के पास पुलिस चौकी खोलने की मांग भी रहती है।[**4**]

निष्कर्ष

अतिशय क्षेत्र (मुक्ति का स्थान) के रूप में जाना जाने वाला तिजारा जैन मंदिर दिल्ली से 110 किलोमीटर दूर और अलवर से 55 किलोमीटर दूर दिल्ली-अलवर राजमार्ग पर स्थित है। यह जैनियों के लिए एक लोकप्रिय तीर्थ स्थल है और प्राचीन इतिहास प्रेमियों के लिए बहुत रुचि का स्थान है।
1956 में एक खुदाई के दौरान आठवें तीर्थंकर चंद्र प्रभु की मुख्य मूर्ति मिली और मंदिर की स्थापना की गई। पद्मासन मुद्रा में चंद्र प्रभु की 15 इंच की मूर्ति बहुत सुंदर लगती है और सफेद संगमरमर से बनी है। शिलालेख के अनुसार, यह मूर्ति विशाखा शुक्ल वि.स. 1554 के तीसरे दिन स्थापित की गई थी। बाद में वर्ष 1972 में चंद्र प्रभु की कमल की स्थिति में 8 इंच की एक और काली मूर्ति की खोज की गई। यह पूज्य आचार्य निर्मल सागरजी महाराज की विशेषज्ञ देखरेख में पाई गई थी। दोनों मूर्तियों की स्थापना के बाद यह स्थान एक तीर्थ के रूप में पुनः स्थापित हो गया।[5,**6**]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. "Tijara Jain temples". Jaindharmonline.com. अभिगमन तिथि 2011-06-09.
2. ↑ "Alwar - Jain Temple, Tijara". Mapsofindia.com. अभिगमन तिथि 2011-06-09.
3. रैना, एके; अग्रवाल, एसके (2004)। पर्यटन विकास का सार: गतिशीलता, दर्शन और रणनीतियाँ। सरूप एंड संस। आईएसबीएन 9788176255271.
4. आरटीडीसी. "अलवर जैन मंदिर" । राजस्थान पर्यटन विकास निगम ।
5. दीक्षित, अमित (17 अगस्त 2018)। "अविश्वसनीय रूप से दिल्ली के कोलाहल के करीब, कला और शांति का निवास धीरे-धीरे आकार ले रहा है। यह एक उल्लेखनीय पुनर्स्थापन नाटक भी है। " 23 अप्रैल 2019 को लिया गया ।
6. मानसिंगका, शुभम (15 जून 2017)। "तिजारा जैन मंदिर" । टाइम्स ऑफ इंडिया । 23 अप्रैल 2019 को लिया गया ।